विषयः इक्कीसवीं सदी में भारत का सामाजिक–आर्थिक विकास एवं जातिप्रथा की समस्या (डॉ0 बी0 आर0 आम्बेडकर के विशेष संदर्भ में)

भारतीय इतिहास का वर्ष 1916, अंग्रेजों के विरूद्ध स्वतंत्रता आन्दोलन वर्ष के रूप में, कई उपलब्धियों सहित भारतीयों के लिए सुखद था। उसी समय मात्र 25 वर्ष की आयु में, उस समय की एवं वर्तमान का सबसे जटिल अखिल भारतीय विषय जातिप्रथा पर कोलम्बिया विश्वविद्यालय, न्यूयार्क में डॉ0 बी0 आर0 आम्बेडकर द्वारा ''भारत में जातिप्रथा : संरचना, उत्पत्ति और विकास'' विषय पर एक लेख प्रस्तुत किया गया था। यह लेख उस समय के प्रतिष्ठित जर्नल 'इण्डियन एण्टिक्वेरी' में अगस्त 1917 में प्रकाशित भी किया गया था।

इस लेख में डॉ0 आम्बेडकर ने कहा था कि भारत की अविछिन्न सांस्कृतिक एकता के कारण जातिप्रथा इतनी विकराल समस्या बन गयी है कि इसकी व्याख्या भी एक कठिन कार्य है, यहाँ समाज केवल विजातीय या सम्मिश्रित भी होता हो तो भी कोई बात होती, परंतु यहाँ सजातीय समाज में भी जातिप्रथा घुसी हुई है। इसका मूल कारण सजातीय विवाह प्रथा की बहिर्गोत्रीय विवाहों पर जकड़ता है। परंतु जाति संरचना की सफलता के लिए समुदाय में स्त्री–पुरूष संख्या समान रखनी आवश्यक होगी, इसमें विषमता सजातीय विवाह प्रथा को चरमरा देगी। इस जाति संरचना को लोकप्रिय बनाने के लिए सिद्धांतों की बैसाखी पकड़ा दी गयी है। इसको सिद्ध करने के लिए सती प्रथा, आजीवन विधवा और बालिका विवाह जैसे क्रूर, कष्टकारी और घातक रिवाज साधन के रूप में आदर्श घोषित किये गये थे। उन्होंने आगे कहा कि मनुष्य में नकलबाजी की जड़ें बहुत गहरी होती हैं, चूँकि किसी समय पुरोहित वर्ग ने सजातीय विवाह या आत्म केन्द्रित रहने का चलन प्रारंभ किया था। जिसकी गैर–ब्राह्मण वर्गों अथवा जातियों ने भी बढ़–चढ़ कर इसकी नकल की, और वे भी इसे अपनाने लगे। इसने सभी उपविभाजनों को प्रभावित किया। इस तरह जातिप्रथा का मार्ग प्रशस्त हुआ।

वर्तमान भारत में गरीबी उन्मूलन, नई आर्थिक नीति, सांविधानिक सुरक्षा, इत्यादि प्रयास लोगों को सामाजिक – आर्थिक रूप से निर्भर करने के लिए किया जा रहा हैं। यह क्रियाएँ , मानव मूल्य या मानव गरिमा को संरक्षित नहीं कर पा रही हैं, और न ही बराबरी के स्तर पर विकास का प्रारूप लोगों में विश्वास बना पा रहा है। भारत में विकास–सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक रूपों में, भी जातिगत आधार पर विभेद सर्वव्यापी है, जो समय–समय पर सतह पर आता रहता है तथा सरिता की तरह निरन्तर सभी समुदायों में मनोवैज्ञानिक रूप से बहती भी रहती है। एक समुदाय की दूसरे के प्रति क्रूरता, निरंकुशता, विलगाव के उदाहरण भी सामने आते रहे हैं।

इसी को ध्यान में रखते हुए समाज कार्य विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ द्वारा डॉ0 भीमराव आम्बेडकर द्वारा 1916 में लिखित लेख में उल्लिखित स्थितियों तथा भारत के सामाजिक–आर्थिक विकास में जाति प्रथा की समस्या पर पिछले 100 वर्षों में तथा वर्तमान में एवं इसमें आगे आने वाली स्थितियों, रूपों तथा परिवर्तनों का विश्लेषण करने हेतु 10 दिसम्बर, 2016 को एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

संगोष्ठी के उप–विषय :

1. डॉ0 बी0 आर0 आम्बेडकर का न्याय परिप्रेक्ष्य,
2. डॉ0 बी0 आर0 आम्बेडकर एवं जेंडर,
3. जातिप्रथा का समाजशास्त्र,
4. जातिप्रथा एवं आर्थिक क्रियाएँ ,
5. जातिप्रथा और मानव विकास एवं उसकी गतिशीलता,
6. जातिप्रथा एवं सामाजिक सद्भाव तथा शांति,
7. जातिप्रथा का सामाजिक एवं राजनैतिक उपयोग,
8. जातिप्रथा एवं सामाजिक व्यवहार तथा समाज कार्य।

शोध पत्र जमा करने हेतु निर्देश :

एक दिवसीय इस संगोष्ठी में सम्पूर्ण भारत से विद्वानों को आदरपूर्वक प्रतिभाग करने हेतु आमंत्रित किया गया है। सभी प्रतिभागीगण से अनुरोध है कि लगभग 200 शब्दों में सारांशिका 20 नवम्बर, 2016 या इसके पूर्व एवं पूर्ण शोध पत्र जो कि 3000 शब्दों से अधिकतम न हो, को 30 नवम्बर, 2016 या इसके पूर्व एम.एस. वर्ड टाइम्स न्यू रोमन, फान्ट आकार 12 अंग्रेजी हेतु तथा क्रुतिदेव 10, फान्ट आकार 16 हिन्दी हेतु ई–मेल seminar.ambedkaersw16@gmail.com पर अपनी प्रस्तुतियों को भेजेंगे। सभी लेखकों को शोधपत्र की स्वीकृतियाँ प्रेषित की जायेंगी। चयनित शोध पत्रों को आई0एस0बी0एन0 सहित सम्पादित पुस्तक में प्रकाशित करने की योजना, उनकी पर्याप्त उपलब्धता पर ही है।

पंजीकरण :

सभी प्रतिभागीगण से अपेक्षा है कि वे पंजीकरण प्रपत्र भरकर ऊपर लिखित मेल पर सारांशिका/पूर्ण शोध पत्र के साथ प्रेषित करेंगे। बाहर के अभ्यर्थीगण कृपया संगोष्ठी स्थल पर पंजीकरण शुल्क जमा करेंगे। उनसे पूर्व पंजीकरण सूचना के आधार पर सामान्य शुल्क ही लिया जायेगा। पंजीकरण शुल्क में सांकेतिक किट एवं भोजन सम्मिलित है। सभी पंजीकरण सुश्री भारती कुरील, संगोष्ठी कोषाध्यक्ष के द्वारा किया जायेगा। मो0 नं0–9026566922

पंजीकरण शुल्क :

- अकादमिक, अभ्यासकर्ता एवं व्यवसायिक व्यक्तियों हेतु– रू0 600/–
- विद्यार्थी, शोधार्थी हेतु– रू0 300/–
- संगोष्ठी के दिन पंजीकरण शुल्क – रू0 800/–

पंजीकरण प्रपत्र

विषय– ''इक्कीसवीं सदी में भारत का सामाजिक–आर्थिक विकास एवं जातिप्रथा की समस्या'' (डॉ0 बी0 आर0 आम्बेडकर के विशेष संदर्भ में)

दिनांक– 10 दिसम्बर 2016

नाम–

पद–

संस्था–

पता / संपर्क–

ई–मेल–

मो0–

सहभागिता की प्रकृति–
शोधपत्र वाचन / प्रतिभागिता / पोस्टर प्रदर्शन

शोध पत्र का शीर्षक–.....
.....
.....
.....

शुल्क– 300 / 600 / 800

हस्ताक्षर

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ :

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ परिसर, वाराणसी जंक्शन रेलवे स्टेशन से मात्र 500 मीटर की दूरी पर स्थित है, एवं यहाँ से मुख्य बस अड्डे की दूरी मात्र 01 किमी0 की है। दिसम्बर माह में यहाँ की जलवायु अधिक ठंडी होती है तथा औसत तापमान 8 डिग्री सेंटीग्रेट से 12 डिग्री सेंटीग्रेट रहता है। इसलिए अपेक्षा है कि बाहर के प्रतिभागीगण अपने साथ आवश्यक गर्म कपड़ें लायें।

महत्वपूर्ण तिथियाँ :

सारांशिका जमा करने की अंतिम तिथि

20.11.2016

पूर्ण शोध पत्र जमा करने की अंतिम तिथि

30.11.2016

पंजीकरण की अंतिम तिथि

05.12.2016

संरक्षक

डॉ0 पृथ्वीश नाग

कुलपति, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

संगोष्ठी अध्यक्ष

प्रो0 राम चन्द्र पाठक

विभागाध्यक्ष, समाज कार्य विभाग

संगोष्ठी संयोजक

डॉ0 अनिल कुमार चौधरी

मो.नं.–09415446343,
ई मेलः akcmgkvp@gmail.com

आयोजन सचिव

डॉ0 शैला परवीन

मो.नं.–07860032023,
ई मेलः drshlparveen566@gmail.com

कोषाध्यक्ष

सुश्री भारती कुरील

मो.नं.–09026566922
ई मेलः bhartiswkvpvns@gmail.com

राष्ट्रीय संगोष्ठी

विषय

''इक्कीसवीं सदी में भारत का सामाजिक–आर्थिक विकास एवं जाति प्रथा की समस्या'' (डॉ0 बी0 आर0 आम्बेडकर के विशेष संदर्भ में)

प्रायोजक

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली

दिनांकः 10 दिसम्बर, 2016

सेवा में,

श्री / सुश्री / डॉ0 / प्रो0

.....

.....

आयोजक

समाज कार्य विभाग,

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,

वाराणसी, उ0प्र0, भारत